पुराने युग की खबरें

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: लेख पैगंबर मुहम्मद उनकी पैगंबरी के सबूत

श्रेणी: लेख सबूत इस्लाम सत्य है मुहम्मद की पैगंबरी के सबूत

द्वारा: Imam Mufti

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

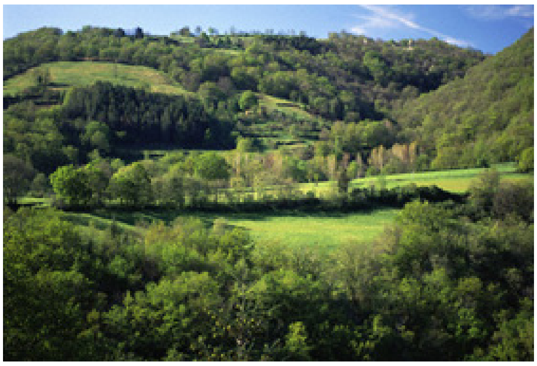

ईश्वर कहते हैं: पैगंबर मुहम्मद की सच्चाई के सबसे मजबूत सबूतों में से एक अनदेखी दुनिया के बारे में उनका ज्ञान है: पिछले जमाने के लोगों और भविष्य की भविष्यवाणियों का उनका सटीक ज्ञान। कोई व्यक्ति कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, केवल बुद्धि के आधार पर आधिकारिक तौर पर (सालों पिछले जमाने की बातें) की बात नहीं कर सकता। जानकारी प्राप्त करने चाहिए के मुहम्मद एक इंसान थे, जो उन लोगों के बीच में नहीं रहते थे जिनके बारे में उन्होंने बात की थी, उन्हें अपनी सभ्यता का कोई ज्ञान विरासत में नहीं मिला था, या वह किसी शिक्षक से नहीं सीखा था।

"ये ग़ैब (परोक्ष) की सूचनायें हैं, जिन्हें हम आपकी ओर प्रकाशना कर रहे हैं और आप उनके पास उपस्थित नहीं थे, जब वे अपनी लेखनियाँ फेंक रहे थे कि कौन मर्यम का अभिरक्षण करेगा और न उनके पास उपस्थित थे, जब वे झगड़ रहे थे।" (क़ुरआन 3:44)

"(हे नबी!) ये (कथा) परोक्ष के समाचारों में से है, जिसकी वह्यी हम आपकी ओर कर रहे हैं। और आप उन (भाईयों) के पास नहीं थे, जब वे आपस की सहमति से षड्यंत्र रचते रहे।" (क़ुरआन12:102)

श्लोकों पर विचार करें:

"और हमने मूसा को पुस्तक प्रदान की इसके पश्चात् कि हमने विनाश कर दिया प्रथम समुदायों का, ज्ञान का साधन बनाकर लोगों के लिए तथा मार्गदर्शन और दया, ताकि वे शिक्षा लें। और (हे नबी!) आप नहीं थे पश्चिमी दिशा में, जब हमने पहुँचाया मूसा की ओर ये आदेश और आप नहीं थे उपस्थितों में। परन्तु (आपके समय तक) हमने बहुत-से समुदायों को पैदा किया, फिर उनपर लम्बी अवधि बीत गयी तथा आप उपस्थित न थे मद्यन के वासियों में कि सुनाते उन्हें हमारी आयतें और परन्तु हमभी रसूलों को भेजने। तथा नहीं थे आप तूर के अंचल में, जब हमने उसे पुकारा, परन्तु आपके पालनहार की दया है, ताकि आप सतर्क करें जिनके पास नहीं आया कोई सचेत करने वाला आपसे पूर्व, ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें। रसूलों को भेजने वाले हैं। तथा यदि ये बात न होती कि उनपर कोई आपदा आ जाती उनके करतूतों के कारण, तो कहते कि हमारे पालनहार! तूने क्यों नहीं भेजा हमारे पास कोई रसूल कि हम पालन करते तेरी आयतों का और हो जाते ईमान वालों में से" (कुरआन 28:43-47)

इसमें समझने की बात यह है कि, मूसा की कहानी की इन घटनाओं का संबंध मुहम्मद से था। या तो उसने उन्हें देखा और वहां मौजूद था, या जो लोग जानते थे उनसे सीखा। किसी भी स्थिति में, वह ईश्वर का नबी नहीं होगा। एकमात्र अन्य संभावना, बल्कि एक अपरिहार्य निष्कर्ष यह है कि मुहम्मद को स्वयं ईश्वर ने सिखाया था।

तर्क की पूरी ताकत को पहचानने के लिए कुछ तथ्यों पर विचार किया जाना चाहिए। मुहम्मद ने किसी धार्मिक विद्वान से नहीं सीखा, उस समय मक्का में कोई यहूदी या ईसाई विद्वान नहीं थे, और उन्हें अरबी के अलावा कोई अन्य भाषा नहीं आती थी। वहयी के अलावा, वह न तो पढ़ सकता था और न ही लिख सकता था। किसी भी मक्का, यहूदी या ईसाई ने कभी मुहम्मद के शिक्षक होने का दावा नहीं किया। अगर मुहम्मद ने किसी स्रोत से सीखा होता, तो उसके अपने साथी जो उस पर विश्वास करते थे, उसका पर्दाफाश कर देते। (अच्छी तरह से सबको बता देते)।

"आप कह दें: यदि ईश्वर चाहता, तो मैं कुर्आन तुम्हें सुनाता ही नहीं और न वह तुम्हें इससे सूचित करता। फिर मैं इससे पहले तुम्हारे बीच एक आयु व्यतीत कर चुका हूँ। तो क्या तुम समझ बूझ नहीं रखते हो? "(कुरआन 10:16)

उनके कड़े विरोध के बावजूद, अविश्वासी उनके अतीत और वर्तमान के ज्ञान का श्रेय किसी भी स्रोत को नहीं दे सकते थे। उनके समकालीनों की विफलता बाद के सभी संशयवादियों के खिलाफ पर्याप्त सबूत है।

यहूदी और ईसाई गलतफहमी का सुधार

नीचे कुरआन के दो उदाहरण दिए गए हैं, जो की यहूदी और ईसाई मान्यताओं में बदलाव लाया:

(1) यहूदी दावा करते हैं कि इब्राहीम एक यहूदी है, यहूदी राष्ट्र का पिता है, जबकि ईसाई उन्हें अपना पिता भी मानते हैं, जैसा कि रोमन कैथोलिक चर्च इब्राहीम को "विश्वास में हमारे पिता" के दौरान रोमन कैनन नामक यूचरिस्टिक प्रार्थना में कहता है। ईश्वर उन्हें कुरआन में जवाब देते हैं:

"हे पवित्रशास्त्र के लोगों, तुम इब्राहीम के बारे में बहस क्यों करते हो, जबकि वह तोराह और सुसमाचार उसके बाद तक प्रकट नहीं हुए थे? तो क्या तुम तर्क नहीं करोगे?" (कुरआन 3:65)

(2) कुरआन जबरदस्ती यीशु को सूली पर चढ़ाने वाले तथ्य को नकारता है, जो दोनों धर्मों के लिए अत्यधिक अनुपात (सोच विचार) की घटना:

"और [हमने उन्हें शाप दिया] उनके द्वारा वाचा को तोड़ने और ईश्वर के संकेतों में उनके अविश्वास और बिना किसी अधिकार के नबियों की हत्या और उनके कहने के लिए, 'हमारे दिल लपेटे गए हैं' [अर्थात, स्वागत के खिलाफ मुहरबंद]। बल्कि, ईश्वर उनके अविश्वास (कुफ्र) के कारण उन पर मुहर लगा दी है, तो कुछ को छोड़ वे ईमान नहीं लाते। मसीहा, यीशु, मरियम का पुत्र, ईश्वर का दूत। 'और उन्होंने उसे नहीं मारा, और न ही उसे सलीब (क्रूस) पर चढ़ाया; लेकिन [दूसरे] को उनके समान बनाया गया था। और वास्तव में, जो उस पर मतभेद रखते हैं, वे इसमें हैं इसके बारे में संदेह है। उन्हें इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है सिवाय निम्नलिखित धारणा (बताया) के। और उन्होंने उसे नहीं मारा, निश्चित रूप से।" (कुरआन 4:155-157)

कुरआन के इस खंडन ने कुछ बुनियादी सवाल खड़े किए हैं।

पहला, अगर इस्लामी सिद्धांत यहूदी और ईसाई धर्म से उधार लिया गया था, तो उसने सूली पर चढ़ाने से इनकार क्यों किया? आखिरकार, दोनों धर्म सहमत हैं कि यह हुआ! यहूदियों के लिए, यह यीशु ही था जिसे सूली पर चढ़ाया गया था, लेकिन ईसाइयों के लिए, यह ईश्वर का पुत्र था। पैगंबर मुहम्मद आसानी से यीशु को सूली पर चढ़ाने के लिए सहमत हो सकते थे, इससे उनके संदेश को अधिक श्रेय मिलता। यदि इस्लाम एक झूठा धर्म होता, यहूदी धर्म या ईसाई धर्म का अनुकरण होता, या यदि मुहम्मद अपने दावे में सच नहीं होते, तो इस्लाम इस मुद्दे पर एक अडिग रुख नहीं अपनाता और इस मामले में दोनों धर्मों को एकमुश्त गलत घोषित करता, क्योंकि इसके इनकार से कुछ भी हासिल नहीं होता।

दूसरा, अगर इस्लाम ने सूली पर चढ़ाने के मिथक को इन दो धर्मों से उधार लिया होता, तो यह उनके साथ एक प्रमुख विवाद को समाप्त कर देता, लेकिन इस्लाम सच्चाई लेकर आया और केवल उन्हें खुश

करने के लिए एक मिथक की पुष्टि नहीं कर सका। यह बहुत संभव है कि यीशु को सूली पर चढ़ाने के लिए यहूदी जिम्मेदार थे, क्योंकि ईश्वर के नबियों के खिलाफ उनके ऐतिहासिक अपराधों को बाइबिल और कुरआन में समान रूप से प्रलेखित किया गया है। लेकिन यीशु के संबंध में कुरआन जोर से कहता है:

"और उन्होंने उन्हें नहीं मारा, और न ही उन्हें सलीब (क्रूस) पर चढ़ाया।"

फिर, यह कैसे संभव है कि मुहम्मद ने यहूदी या ईसाई विद्वानों से सीखी गई जानकारी के आधार पर कुरआन का निर्माण किया, जब उन्होंने उनके सिद्धांत को उखाड़ फेंकने वाली विचारधाराओं को लाया?

तीसरा, सूली पर चढ़ाए जाने से इनकार करना अपने आप में अन्य ईसाई मान्यताओं को नकारता है:

(i) मनुष्य के पापों के लिए यीशु का प्रायश्चित।

(ii) सभी पुरुषों द्वारा किए गए मूल पाप का बोझ।

(iii) क्रूस और उसकी वंदना के रहस्य का खंडन।

(iv) अंतिम भोज और यूचरिस्ट (ईसाई संस्कार)।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पैगंबर, ईश्वर की दया और आशीर्वाद उस पर होता रहे, अतीत के राष्ट्रों के बारे में बताया गया था कि वे केवल लोकगीत नहीं थे, न ही वे यहूदी या ईसाई विद्वान पुरुषों से सीखे गए थे। बल्कि, वे सृष्टि के ईश्वर द्वारा सात आकाशों के ऊपर से उस पर प्रकट किए गए थे।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/526

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।